2

प्राचीन भारतीय इतिहास के जानकारी के स्रोत

भारत वर्ष का प्राचीन इतिहास अत्यंत गौरवपूर्ण रहा परन्तु दुर्भाग्य वश हमें अपने प्राचीन इतिहास के पुनर्निर्माण के लिए उपयोगी सामग्री बहुत कम मिलती है। प्राचीन भारतीय इतिहास में इन ग्रंथों का प्रायः अभाव था जिसको आधुनिक समय में इतिहास की संज्ञा दी जाती यह खलता है कि हमारे यहां हरोडोटस, हेरोडोटस लिवी जैसे इतिहासकार नहीं थे जैसे की यूनान, रोम, इत्यादी में हुए थे। इसकी का कारण सम्भवतः यह है कि प्राचीन भारतीयों ने इतिहास को उस दृष्टी से कभी देखा जो आधुनिक समय के विद्वान देखते हैं उनका दृष्टीकोण पूर्णतः धार्मिक था। उनके दृष्टी में इतिहास सम्राट या सम्राज्यों का उत्थान पतन का गाथा न होकर उन समस्त कर्मों का संकलन मात्र था जिनके ऊपर मानव जीवन अधारित है अतः उनकी रूची धार्मिक ग्रंथों एवं वंशावलियों में अधिक लगी न की राजनीतिक घटनाओं के अंकन में

महाभारत में जो इतिहास एवं परिभाषा दी गई है उससे भारतीय को इतिहास विषयक कल्पना पर पर्याप्त प्रकाश डालता है। इस ग्रंथ के अनुसार ऐसी रुचीकर विषय जिसके जिवन के चार पुरुषार्थ धर्म अर्थ, काम तथा मोक्ष की शिक्षा मील सके उसे इतिहास कहते हैं।

अतः प्राचीन भारतीय इतिहासकार उन घटनाओं को कोई महत्व नहीं देते थे जिससे उन चारो पुरुषार्थ की शिक्षा न मील सके यही कारण है कि प्राचीन भारतीय इतिहास राजनीतिक और सांस्कृती ज्यादा है।

आधुनिक इतिहासकार इतिहास में केवल राजनीति घटनाओं का वर्णन करना अपना कर्तव्य नही

उनके वर्णन में जनसाधारण भी उतना ही महत्व रखता है। जितना कि शासक और योद्धा वह उस समय के सामाजिक आर्थिक और धार्मिक परिवर्तनों का अध्ययन करता है।

वस्तुतः इतिहासकार एक वैज्ञानिक की भांति उपलब्ध सामग्री की समीक्षा करके अतीत का सही चित्र प्रस्तुत करने का प्रयत्न करने प्रयत्न करता है। जैसे की हम जानते है कि प्राचीन भारत में कोई एतिहासिक ग्रंथ प्राप्त नही होता है। तथापि पुरातात्विक एव साहित्यीक दोनो ~~स्रोतों~~ स्रोतो से प्राचीन भारतीय इतिहास के कालक्रम स्पष्टीकरण एवं तारतम्यता देने में इतिहासकारों में बहुत ही सफलता प्राप्त की है

नोट :— प्राचीन भारतीय इतिहास राजनीतिक्रम है और सांसकृतिज्यादा

प्राचीन भारतीय इतिहास के जानकारी के तीन श्रोत है :—

[A] साहित्यिक स्त्रोत
(B) विदेशी विवरण
[C] पुरातात्विक साक्ष्य

A

साहित्यिक स्रोत

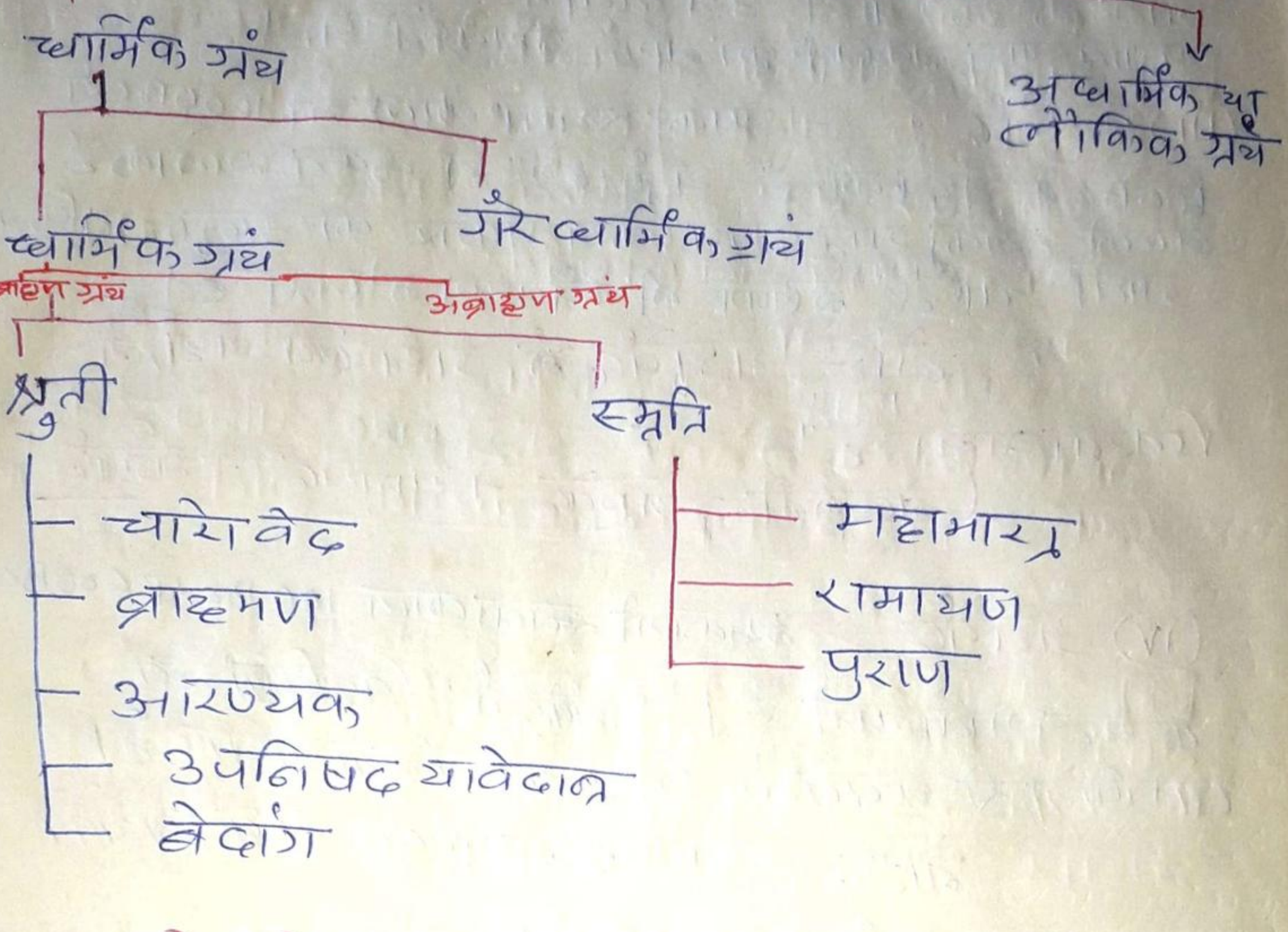

- धार्मिक ग्रंथ
  - धार्मिक ग्रंथ
    - ब्राह्मण ग्रंथ
      - श्रुती
        - चारो वेद
        - ब्राह्मण
        - आरण्यक
        - उपनिषद या वेदान्त
        - वेदांग
    - अब्राह्मण ग्रंथ
      - स्मृति
        - महाभारत
        - रामायण
        - पुराण
  - गैर धार्मिक ग्रंथ
- अधार्मिक या लौकिक ग्रंथ

चारो वेद

आर्यों के आगमन के पश्चात आर्य लोग ने चार वेदो की रचना की जो इस प्रकार से वर्णित है।

① ऋगवेद :— ऋगवेद भारत का सबसे प्राचीनतम ग्रंथ है। इसकी रचना 1500BC से 1000BC के मध्य हुई थी ऋगवेद में 10 मंडल (भाग) है जिसमें से 7 मंडल आदी प्राचीन है जबकी पहला एंव दसवां मंडल बाद में जोड़ा गया है। ऋगवेद में (1028) सूक्त है जबकी श्लोको की संख्या 10462 है ऋगवेद में मुख्यतः इन्द्र, वरूण, अग्नि, मित्र, मारूत इत्यादी देवताओं के सम्मान में स्तुती गायी गई है।

नोट भारत का प्रसिद्ध मंत्र यानी गायत्री मंत्र ऋगवेद से लिया गया है। गायत्री मंत्र देवी सावित्री समर्पित है सावित्री सुर्य का प्रतिरूप है।

Scanned by TapScanner

(II) सामवेद :— इसकी रचना काल 1000BC से 600BC के मध्य मानी जाती है। ऋग्वेद के कुछ मंत्रों को चुनकर गाने के उद्देश्य से उसे धुनों में बांधा गया और उस पुनर्विन्यास संकलन का नाम सामवेद पड़ा।

(III) यजुर्वेद :— इसकी रचना काल भी 1000BC से 600BC के मध्य की है यजुर्वेद में न केवल श्लोक है बल्कि उसको गाते समय किस प्रकार का अनुष्ठान किया जाना चाहिए इसका भी विवरण मिलता है।

नोट— यजुर्वेद को गद्य एवं पद्य दोनों में लिखा गया है।

[वेद त्रयी = ऋग्वेद + सामवेद + यजुर्वेद]

(IV) अथर्वेद -> इसका भी रचनाकाल 100 BC से 600 BC के मध्य मानी जाती है। अथर्वेद में विपत्तियों एवं व्याधियों से बचने के लिए मंत्र दिया गया है।

नोट :— सामवेद, यजुर्वेद एवं अथर्वेद में सबसे महत्वपूर्ण ~~अथर्ववेद है~~

[त्रैतक संहिता = सामवेद + यजुर्वेद + अथर्ववेद]

* ब्राह्मण ग्रंथ *

(1) ब्राह्मण का अर्थ "यज्ञ" होता है अतः यज्ञीय विषयों का प्रतिपादन करने वाले ग्रंथ "ब्राह्मण" कहे गये है

(2) वैदिक ग्रंथों के अन्त में वैदिक अनुष्ठान को पूरा करने के लिए एक विशेष प्रकार के अनेक ग्रंथों की रचना की गई जिसे सम्मिलित रूप में ब्राह्मण ग्रंथ कहा गया है इसकी रचना यज्ञ को विधान तथा इसकी क्रिया को समझने के लिए की गयी थी इसका प्रधान विषय यज्ञों का प्रतिपादन था, तथा इनकी विधियों की व्याख्या करना है

(8)

[3] यज्ञीय क्रमकांडो के अतिरिक्त इसमें अनेक समाजिक विषयों का वर्णन भी प्राप्त होता है। ब्राह्मण ग्रंथ यज्ञों की वैज्ञानिक, अध्यात्मिक तथा भौतिक मिमांश प्रस्तुत करने वाले महान विश्व कोष है।

(4) प्रत्येक वेद के अलग-अलग ब्राह्मण ग्रंथ होते थे।

(1)

वेद	ब्राह्मण
(I) ऋग्वेद	एतरेय एंव कौषीतकि
(II) सामवेद	पंचविंश
(III) यजुर्वेद	सतपथ एंव तैतरीय
(IV) ~~अथर्वेद~~ अथर्ववेद	गोपथ

नोट:— (I) ब्राह्मण ग्रंथों में सतपथ ब्राह्मणो का सर्वाधिक महत्व है इसमें 14 कांड है जिसमें विभिन्न प्रकार के यज्ञों का पूर्ण रुप विस्तृत वर्णन ~~व~~ प्रस्तुत किया गया है।

(II) वेद स्तुती प्रधान है जबकि ब्राह्मण ग्रंथ विधि प्रधान है।

(III) अधिकाशतः ब्राह्मण ग्रंथ गद्य में लिखे गये है।

☆ आरण्यक ☆

[1] आरण्यक में दार्शनिक एवम रहस्यवादी बातो का विवरण है। आरण्यक की शिक्षा एकांत जंगल में दीजाती थी

[2] इन यज्ञों के स्थान पर ज्ञान एंव चिंतन को प्रधानता दी गयी है और इस प्रकार ये दार्शनिक रचनाये है। इन्ही से कलान्तर में उपनिषदों का विकास हुआ है

[3] आरण्यक ग्रंथ वाणप्रस्थ आश्रम के यज्ञो, प्रतीतक कार्यों का विवरण देते थे। यज्ञों की आध्यात्मिक व्याख्या इसमे प्रस्तुत की गयी है तथा आरण्यक मे कर्म एव ज्ञान का समान्वय तत्व मिलता है।

(4) आरण्यक ग्रंथों की संख्या बहुत ही अधिक है परन्तु इसमे कुछ ही मीलते है। एतरेय, सखायण तैत्रिय, वृहदारण्यक, येमिनी, छान्दोग्य, आदी